अध्याय 2

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवे अपने दल तथा इस पाठ्यक्रम के लिए प्रार्थना करे कि परमेश्वर चेले बनाने में सहायता करें।

2.	**गवाही देना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मत्ती 4:12 – 7:29**

बारी-बारी से अपनी गवाही दें (या अपने नोट्स में से पढ़े) संक्षेप में जो कुछ आपने परमेश्वर के साथ बिताएँ अपने निजि समय में बाइबल के उस संदर्भ वचन (मत्ती 4:12-7:29) से सीखा है उसे दूसरों के साथ बाँटें।
जो भी गवाही दे रहा है उसकी बातों को ध्यान से सुने और उन्हें गम्भीरता से लें। उस समय कोई वाद-विवाद न करें।

3.	**याद कर लेना** (20 मिनट)	***निश्चितता*** **उद्धार निश्चित है; युहन्ना 10:28**

क.प्रेरित करना (मनन करने के लिए)

पढ़े इफिसियों 6:11,17; मत्ती 4:2-4; (व्यवस्थाविवरण 8:3)
खोज निकालें विचार-विमर्श करें।फिर याद करने के लिए दिया गया वचन, लेखाँश या अध्याय क्यों महत्त्वपूर्ण है।
नोट्स:याद किए वचन आपको दुष्ट की शक्तियों पर विजय पाने में आपकी सहायता करेंगे।

क. मनन करना (बाइबल के लेखाँश पर)

याद करने का सबसे पहला वचन सम्बन्धित है, "निश्चितता से"
बाइबल के याद करने वाले पाँच मुख्य शीर्षक है उद्धार निश्चित है, प्रार्थना के उत्तर मिलना निश्चित है, विजय निश्चित है, क्षमा निश्चित है, और परमेश्वर का मार्गदर्शन निश्चित।
उद्धार की निश्चितता के लिए याद करने का वचन - युहन्ना **10:28** जो कहता है, "मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होंगे और कोई भी उनको मेरे हाथों से छीन नहीं सकता है।"

1. अनन्त जीवन का अर्थः

अनन्त जीवन क्या है? अनन्त जीवन एक नए प्रकार का जीवन है। वह एक अदभुत जीवन है, एक अर्थपूर्ण जीवन है, एक चुनौतियों से भरा जीवन है, एक स्थापित जीवन है और एक संतुष्ट जीवन है!!! वह एक ऐसा जीवन है जो कभी खत्म नहीं होता है। और इन सब से ऊपर अनन्त जीवन यह है कि हम एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को गहराई और निजि रूप से जान लें।। (युहन्ना 17:3)

2. अनन्त जीवन को कैसे प्राप्त करेः

यह तो एक परमेश्वर का करुणामय उपहार है। परमेश्वर केवल एक ही व्यक्ति के द्वारा उद्धार देता है जिस का इतिहास में नाम है और वह है यीशु मसीह। अनन्त जीवन को कमाया नहीं जा सकता है उसे तो केवल उपहार के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। जब आप यीशु मसीह को अपने दिल और जीवन में ग्रहण करते हैं उसी घड़ी आप अनन्त जीवन प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन यदि कोई यीशु मसीह को ग्रहण नहीं करता है तो उसे अनन्त जीवन भी प्राप्त नहीं

होता है।

3. विश्वासियों के लिए तीन आश्वासनः

उसे अनन्त जीवन मिल चुका है और उसका अन्त नहीं है।
अन्तिम न्याय के दिन उसका तिरस्कार नहीं होगा। वह नरक में नाश नहीं किया जाएगा।
कोई भी वस्तु या व्यक्ति उसे यीशु मसीह के हाथों से छीन कर नहीं ले जा सकता है।

क. याद करना

1. लिखो

बाइबल के वचन को किसी गत्ते के कार्ड पर लिख लें या फिर अपनी कॉपी के किसी खाली पन्ने पर जैसा नीचे दर्शाया गया है। पहली पंक्ति में विषय का शीर्षक लिखें। फिर दूसरी पंक्ति मे बाइबल का पद का संदर्भ लिखें। फिर एक लकीर खींच कर जो भी पद है उसे पंक्ति अनुसार लिख दें। फिर सबसे नीचे अन्य संदर्भ वचन लिख दें। ये संदर्भ वचन उस पन्ने के पीछे भी लिख दें।

उदाहरण:

उद्धार निश्चित है युहन्ना 10:28
मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नष्ट न होंगे; और कोई भी उन्हें मेरे हाथों से छीन नहीं सकता है. युहन्ना 10:28

युहन्ना 10:28

2. याद करें

बाइबल के वचन को सही रीति से याद करें।
हमेशा विषय के शीर्षक से शुरू करें। बाइबल के वचन का संदर्भ और पद की पहली पंक्ति लिखें।
जब आप इस पद को बिना किसी गलती के बोल सकते हैं तब दूसरी पंक्ति को जोड़ दें। और फिर पहली और दूसरी पंक्ति को एक साथ बोलें।
इसी रीति से फिर तीसरी पंक्ति को जोड़ कर एक साथ बोलें। अर्थात विषय, संदर्भ और तीनों पंक्तियाँ एक साथ बोले।
किसी भी बाइबल के वचन को तोड़-तोड़ कर याद न करें। क्योंकि इस रीति से आप उस सामन्जस्य को भूल जाते हैं जो उसके पूरे अर्थ के लिए ज़रूरी होता है।

हर बार किसी भी पद को शुरू से आखिर तक पढ़ें।

हमेशा पद को पढ़ने के बाद उसका संदर्भ याद रखना सबसे कठिन होता है इसलिए पद के अन्त में सदा संदर्भ वचन भी साथ ही लिखें।

इस रीति से किसी भी वचन को याद करने का अनुक्रम इस तरह से होना चाहिए - शीर्षक, बाइबल का वचन संदर्भ वचन का लेखाँश और फिर दोबारा से वचन का संदर्भ वचन.

4. बाइबल अध्ययन (70 मिनट) *(जीवन सम्बन्धी प्रश्न)*

परमेश्वर के वचन के प्रति मेरी प्रतिक्रिया कैसी हो ? लूका 8:4-15

बाइबल का, एक दल के साथ अध्ययन करने का उद्देश्य यही है कि हम सब एक साथ यीशु मसीह के साथ और एक दूसरे के साथ भी एक सम्बन्ध स्थापित कर सकें। यह एक सहायता है जिसके द्वारा बाइबल के ज्ञान को समझने में और अपने जीवन में उसकी सच्चाईयों को प्रयोग में लाने में सहायता मिलती है। इस लिए यह महत्त्वपूर्ण बात है कि दल में हम एक दूसरे को उत्साहित करें कि वे बाइबल अध्ययन के विचार-विमर्श में भाग लें। हर व्यक्ति जो इस में भाग लेता है और अपने विचार प्रकट करता है बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। किसी को भी दूसरे के विचारों को सुन कर दुखी नहीं होना है और न ही विरोध करना है। हो सकता है बाइबल के शिक्षकों के अनुसार जो कोई कहता है वह बिलकुल गलत हो सकता है। दल के अगुवे को सब को प्रोत्साहित करना है कि वे एक साथ सत्य वचन को खोज कर और उसपर बातचीत करके बाइबल के सत्य वचन सीख लें। दल के हर सद्स्य को अनुभव होना चाहिए कि जब वे बोलते हैं तब दल के अन्य सदस्य उनकी बात सुन रहे हैं। जो कुछ भी एक सदस्य बोलता है उसे गम्भीरता से लें और उसे मान लें। याद रहे दल के सदस्य एक दूसरे के साथ बाइबल ज्ञान की किसी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले रहे हैं। उनको प्रेम के साथ एक दूसरे को उत्साहित करना है कि वे इस ज्ञान को प्राप्त करके उन्नति करें और जो सीखते हैं उसे दूसरों को विश्वास के साथ बताने पाएँ।

बाइबल की शिक्षा देने के लिए नीचे दिया गया उदाहरण इस रीति से तैयार किया गया है कि वह दल के अगुवे को तैयारी करनें में उस समय उनकी सहायता कर सके जब वे किसी विषय पर बातचीत कर रहे हों या किसी कठिन प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश कर रहे हों। आप के बाइबल के सोच-विचार के समय में बहुत सी बातें उभर कर आ सकती हैं। तब दल के सदस्य अच्छी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और इसके लिए प्रश्न भी पूछ सकते हैं।

बाइबल अध्ययन के पाँच तरीकों की विधि का इस्तेमाल करें और एक साथ लूका 8:4-15 का अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें -आईए हम लूका 8:4-15 के वचन एक साथ पढ़ें।
आईए हम एक-एक करके सभी वचनों को पूरे लेखाँश के समाप्त होने तक पढ़े।

अवलोकन

कदम. 2 खोज करें

ध्यान दें- इस लेखाँश में कौन सी सच्चाई महत्त्वपूर्ण है? या इस लेखाँश में क्या ऐसा है जिसने आपके दिल को छू लिया है?

लिख ले - इस लेखाँश में ऐसे एक या दो सत्य खोज कर निकालें जो आपके समझ आ रहे हैं। उन पर मनन करें और उनके विषय में आप क्या सोचते हैं उसे अपनी कापी पर लिखें।

गवाही दें - (जब दल के सदस्यों ने 2 मिनट तक मनन कर लिया हो और फिर जो जिसको लगा कि उनकी समझ में आया था उसे लिख लिया है तब बारी-बारी से वे उसे सब के सामने कहें।)

आइए हम एक दूसरे के साथ उसे बाँट ले जो कुछ हम ने खोज निकाला है। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो भिन्न सदस्यों ने बाँटा था। याद रहे कि उस छोटे दल में हर सदस्य ने कुछ अलग बाँटा है। यह ज़रूरी नहीं है कि सब की गवाही एक सी हो।

खोज 1. वहाँ पर 3 व्यक्ति थे जो चाहते थे कि वह परमेश्वर के उस वचन के साथ कुछ करे, जो कि मेरे दिल में बोया गया है।

सबसे पहली बात वह **मसीह** है, जो हमारे दिलों में वचन का बीज बोता है। वह चाहता है कि उसका वचन मेरे जीवन में फलदायी हो। दूसरी बात है कि **शैतान** भी है। जो चाहता है कि किसी भी तरह से परमेश्वर के वचन को हमारे दिल से निकाल कर दूर ले जाए। वह नहीं चाहता है कि परमेश्वर का वचन मेरे जीवन पर किसी भी तरह का प्रभाव डाले। और तीसरी बात है **मैं।** मुझ पर इस बात की ज़िम्मेदारी है कि मैं परमेश्वर के वचन के साथ जो मसीह ने मेरे दिल में बोया है

कुछ करूँ। यदि मैं उस वचन को सुनता हूँ और उसे अपने भले के लिए दिल में संजो कर रखता हूँ और यदि उस पर कठिन समय होने पर भी दृड़ता से चलता रहूँ तो निश्चय ही मैं एक फसल उत्पन्न कर सकूँगा। लेकिन यदि मैं मसीह के उस वचन के साथ कुछ भी नहीं करता हूँ तो मैं उसे पूरी तरह से खो देता हूँ। इस लेखाँश में मेरे लिए एक महत्त्वपूर्ण सच्चाई है और वह यह है कि मुझे परमेश्वर के वचन के साथकुछ करना है। और यह मेरी ही ज़िम्मेदारी है कि मैं उसे अपने जीवन में लागू करूँ।

8:12

<u>खोज 2. - इतना ही नही शैतान परमेश्वर के वचन को मेरे दिल से निकाल देना चाहता है।</u>

14 पद परमेश्वर का वचन हमें हर शत्रु के विषय में बताता है। यहाँ पर वचन कहता है चिन्ताओं के कारण या धनी हो कर ऐश का जीवन बिताने की इच्छा के कारण, परमेश्वर के वचन का गला घोंट दिया जाता है। बाहर जो पापी संसार है और मेरे अन्दर का पापी स्वभाव मसीह के वचन के अन्य बड़े शत्रु हैं। वे नहीं चाहते हैं कि परमेश्वर का वचन मेरे जीवन में फलवन्त हो। इसलिए वे परमेश्वर के वचन का गला दबा कर मार डालते हैं। मैं जान गया हूँ कि मेरी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है कि मैं चौकस रहूँ कि किसी भी तरह की चिन्ता धन-दौलत, या ऐश मेरे अन्दर बसे परमेश्वर के वचन का गला न घोट सके।

<u>तरीका 3. प्रश्न</u> **व्याख्या**

ध्यान दें -

इस दल से आप इस लेखाँश से किसी भी विषय पर क्या प्रश्न करना चाहेंगे?

आईए हम सम्पूर्ण सच को जानने की कोशिश करें जो लूका के 8:4-15 में निहित है। और जिसे हम अब तक पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं।

लिख लें-अपने प्रश्न को जितना भी सम्भव हो सके स्पष्ट रूप से कहें। फिर उस प्रश्न को अपनी कापी में लिख लें।

गवाही दें- (जब सारे दल के सदस्यों ने दो मिनट तक मनन करके अपना प्रश्न कापी पर लिख लिया है तब एक-एक करके वे अपने वचन को सब के सामने बोले।)

विचार-विमर्श- (फिर उन प्रश्नों मे से कुछ प्रश्न चुन ले और अपने दल के साथ मिल कर उन पर विचार विमर्श करके उन का उत्तर खोज निकालें।)

(नीचे कुछ ऐसे ही प्रश्नो का उदाहरण दिया गया है जो विचार विमर्श के दौरान विद्यार्थी पूछ सकते हैं।

8:5

<u>प्रश्न 1. बीज किस का प्रतीक है।</u>

नोट्स -बीज परमेश्वर के वचन का प्रतीक है। (लूका 8:11) विशेषकर उस संदेश में जहाँ पर परमेश्वर के राज्य का वर्णन है। (मत्ती 13:19) जो शुरू होता है सुसमाचारों से। (उदाहरण के लिए मरकुस 1:14-15; और प्रेरितों के काम 20:24-25; 28:23)

परमेश्वर का राज्य वह है जहाँ पर परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के द्वारा होगा, विशेषकर उन लोगों के दिलों पर और उनके जीवनों पर जो उसके लोग हैं। (लूका 17:20-21) इसका परिणाम है सम्पूर्ण उद्धार, शुरू से आखिर तक। (मरकुस 10:25-26) उनका इस पृथ्वी पर एक कलीसिया के रूप में निर्माण होगा, (मत्ती 16:18-19) उनके मानव समाज के हर पक्ष में किए गए भले काम (मत्ती 25:34-36; रोमियो 14:17) और अन्त में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की स्थापना करना। (1 कुर. 15:24-26; प्रकाशितवाक्य 11:15)

8:5-8

<u>प्रश्न 2. चार तरह की मिट्टी किस का प्रतीक है?</u>

नोट्स -यीशु के दिनों में किसानों के पास कोई मशीने नहीं होती थीं जिसके द्वारा वे बीज बोते। इसके लिए वे अपने हाथों का इस्तेमाल करते थे और चलते-चलते अपने दाहिने और बाएँ ओर बीजों के बिखेर देते थे। सो तब कुछ बीज उस पखडण्डी पर भी गिर जाते थे जिस पर वह चल रहा होता था। फिर कुछ बीज खराब भूमि पर गिर जाते थे जहाँ पर ज़मीन पथरीली होती थी। और ऊपर की भूमि बहुत ही उथली होती थी। कुछ बीज ऐसे स्थान पर गिर जाते थे जहाँ काँटे होते थे। और कुछ अच्छी और साफ भूमि पर गिरते थे।

सो ये चार तरह की भूमि हमारी भिन्न परिस्थितियों की और हमारे दिल के व्यवहार काप्रतीक है (लूका 8:12; मत्ती 13:19) और जान ले कि इस संसार में चार तरह के लोग होते हैं।

8:10

<u>प्रश्न 3. परमेश्वर के रहस्यों की जानकारी केवल चेलों को ही क्यों दी जाती है?</u>

नोट्स -यह न्यायसंगत लगता है पर ऐसा नहीं है। परमेश्वर के राज्य का रहस्य तो पूरे नए नियम के सुसमाचार का है। यीशु मसीह की पहले आगमन के बाद से यह कोई अनजाना रहस्य नहीं रहा है बल्कि अब तो यह एक प्रकट किया हुआ सत्य है।

पर एक बात तो है कि यीशु मसीह इस सत्य के संदेश को सब के सामने प्रकट नहीं करता है। हालाँकि अनेक लोग नए नियम के सुसमाचार की शिक्षाओं को सुनते हैं। पर वे सच में उन्हें सुनते नहीं है क्योंकि उन्होने अपने हृदय को कठोर कर लिया है और मसीह ने उन्हीं शब्दो को दुबारा से नए नियम में कहा है जो यशायाह नबी ने कहा था।

पुराने नियम में- यशायाह के **1:2-15** में हम पढ़ते हैं कि इस्राएल के बच्चों ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था और वे भ्रष्ट हो गए थे। यशायाह6:9-10 परमेश्वर उनका न्याय करता है और कहता है, "जाकर उन से कह दे, सुनते ही रहो परन्त न समझो, देखते ही रहो पर परन्तु न बूझो। तू इन लोगों के मन को मोटा कर और इनके कानों को भारी कर और उनकी आँखों को बन्द कर दे। कहीं ऐसा न हो कि वे सुनने लगे, मन से बूझें और मन फिरा कर चंगे हो जाएँ।" इस्राएलियों ने इतने चमत्कार देख लिए थे और भविष्यद्वक्ताओं के इतने अधिक भले वचन सुन लिए थे पर अपने चुनाव के कारण अपने दिलों को परमेश्वर के विरुद्ध सख्त कर लिया था। इसलिए परमेश्वर ने उन को वहीं बन जाने दिया जो वे बनना चाहते थे। उन्होंने अपने कान और आखें बन्द कर ली थीं इस लिए परमेश्वर ने उनके कानों और आँखों को और भी कस कर बन्द कर दिया था। और तब उन्होंने वही काटा जो उन्होंने बोया था। (गलातियों 6:7-8)

नए नियम में- मत्ती के 12 अध्याय में हम ने पढ़ा था कि फरीसियों और अन्य यहूदियों ने भी यीशु मसीह के विरुद्ध खड़े होकर उसका विरोध किया था। उन्होंने यीशु मसीह की आलोचना की थी और उनको दोषी ठहराया था। (मत्ती 12:2) उन्होंने मासूम लोगों की निन्दा की थी। (मत्ती 12:7) उन्होंने यीशु के लिए जाल बिछाए थे। (मत्ती 12:10) उन्होंने यीशु को मार डालने की योजनाएँ भी बनाई थी। (मत्ती 12:14) उन्होने यीशु के विरुद्ध परमेश्वर की निन्दा करने वाले का दोष लगाया था। यह कह कर कि यीशु दुष्ट आत्माओं को शैतान की सामर्थ से निकालता है। (मत्ती 12:24, मत्ती के 13:10-15; और लूका के 8:10) यीशु ने यह सब उसी पुराने नियम के न्याय के द्वारा साबित कर दिया। उन्होंने यीशु के अनेक चमत्कारों के विषय में सुना था और उसकी अनेक शिक्षाओं के विषय में भी सुना था पर उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास करने से इन्कार किया था। इसलिए यीशु ने कहा उनका न्याय भी पुराने नियम के अनुसार किया जाएगा। उन्होंने भी यीशु के विद्रोह में अपने दिलों को सख्त किया है। इसलिए यीशु मसीह उनको भी अपने चुनाव के परिणामों के हवाले कर दिया है। वे तब भी बाइबल के संदेश और सुसमचार सुनते हैं। पर वे कभी भी उसको समझ नहीं पाएंगे उस समय तक नहीं जब तक वे पश्चाताप् न कर लेते थे।

आज भी वैसा ही है - हर व्यक्ति के पास ज़िम्मेदारी है कि वह बाइबल और परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर दे। यदि आपका व्यवहार फरीसियों के समान है कि आप हर समय यीशु मसीह की आलोचना करते रहते हैं तो आपका दिल भी कठोर हो जाएगा। और तब आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नही कर पाएँगे।

फिर भी जो लोग मन से परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देते हैं उनको डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। हर अच्छा और साफ दिल हमेशा परमेश्वर के वचन को समझेगा वह उसमें बढ़ कर फलवन्त हो जाएगा।

साराँश - हर एक जो अपने दिल को बाइबल के परमेश्वर और परमेश्वर के वचनों के प्रति सख्त करेगा वह अन्त में इतना सख्त दिल हो जाएगा कि उसे परमेश्वर का वचन सुनाई ही नहीं देगा।
लेकिन हर वह व्यक्ति जो पूरे दिल से परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देगा और उसे समझेगा वह फलवन्त होगा। परमेश्वर की दिल से खोज करने वाले का कभी भी तिरस्कार नहीं होगा। (युहन्ना 6:37)

8:12

प्रश्न 4 - वह भूमि जो पगडण्डी के समान सख्त है वह किस का प्रतीक है?

नोट्स -पगडण्डी तो उस कठोर दिल की तस्वीर है जिस पर कोई असर नहीं होता है और जिससे कोई प्रतिउत्तर नहीं मिलता है वह खेत का किनारा है।

जब भी मेरे दिल की कोई ऐसी हालत होती है या वह कुछ ऐसे व्यवहार को दर्शाता है जो कहता है,मैं परमेश्वर के वचन का कोई प्रतिउत्तर नहीं देता हूँ। तब मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर के वचन में मेरे लिए कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है। मैं बाइबल के संदेश को समझने का कोई प्रयास नहीं करता हूँ। (मत्ती 13:19) या फिर मैं उसके प्रति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता हूँ। अन्त में मेरा दिल वचन को नज़रअन्दाज़ करने लगता है और उसके प्रति कठोर हो जाता है। शैतान परमेश्वर के वचन की सामर्थ को जानता है और वह सदा इस कोशिश में लगा रहता है कि कैसे परमेश्वर के उस वचन को जिसे हमे ने कबूल नहीं किया है उसे खींच कर हम से दूर ले जाए।

इसके लिए हमें जो मुख्य पाठ हमें सीखना है वह यह कि हम हर वह प्रयास करें जिससे हम बाइबल के वचनऔर उसमें छुपे संदेशको समझ जाएँ और उसे ग्रहण कर लें। (मरकुस 4:20)जब भी मैं वचन को सुनता हूँ, पढ़ता हूँ या फिर उसका अध्ययन करता हूँ तब मुझे उसी समय अपने वचन के प्रति व्यवहार से निबटना होगा जो मुझे वचन के प्रति विरोधी बना देता है।

8:12

प्रश्न 5. शैतान परमेश्वर के वचन को हमारे दिलों से दूर क्यों ले जाना चाहता है?

नोट्स -शैतान परमेश्वर के वचन को हम से इस लिए दूर ले जाना चाहता है क्योंकि वह एक सामर्थी ज़रिया है जो हमें सुरक्षित रखता है और बदलने नहीं देता है। हर वह व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन पर विश्वास रखता है वह बचाया जाता है (रोमियो 10:17) इसका अर्थ यह है कि उसे शैतान के चंगुल से बाहर खींच लिया गया है। और वह उसके राज्य से भी बाहर है। प्रभु यीशु मसीह ने उस सामर्थी व्यक्ति शैतान को उसकी सारे कब्ज़ा किए अधिकारों को लूट लिया है। (मत्ती 12:28-29; युहन्ना 12:31-32) बाइबल बताती है कि यीशु मसीह ने हमें अँधकार के राज्य से छुड़ा लिया है और परमेश्वर के पुत्र के राज्य में जिससे वह बहुत प्रेम करता है ले आया है। (कुलुसियो1:13) क्योंकि परमेश्वर के वचन का अर्थ है लोगों को बचाना और उनके मनों को बदल डालना। शैतान तो हर कोशिश करेगा कि किसी तरह से परमेश्वर के वचन को लोगों के दिलों से छीन कर ले जाए इस लिए चौकस रहें यीशु मसीह ने आपको चेतावनी दी है।

8:13

प्रश्न 6. पथरीली भूमि किस का प्रतीक है?

नोट्स -पथरीली ज़मीन उस हृदय की तस्वीर है जो उथली, जिसमें जड़ पकड़ना मुश्किल है और जो बहुत ही मनमौजी, बिना विचारे कुछ करने वाले होते हैं।

जब भी मेरे दिल कि परिस्थिति कुछ ऐसी होती है और मेरा स्वभाव कुछ ऐसा ही होता है तब मैं बड़े ही आवेग से परमेश्वर के वचन के प्रति कोई प्रतिक्रिया कर बैठता हूँ। सभाओं के दौरान मैं बहुत ही उत्साहित हो जाता हूँ। मेरी मनोभावनाएँ भी बहुत उत्साहित हो जाती हैं। मुझ पर जो भी वक्ता बोल रहा होता है उसकी गहरा प्रभाव पड़ता है। और मैं उसी क्षण कूद कर खड़ा हो जाता हूँ और यीशु को ग्रहण करने के लिए उसके वचन को ग्रहण करने के लिए और कोई भी निर्णय लेने के लिए तैयार हो जाता हूँ।

फिर मैं उन वचनों के शब्दो के अर्थ के विषय में सोचने लगता हूँ। लेकिन मैं उनके परिणाम के विषय में कभी नहीं सोचता हूँ। जब संसार के लोग मुझे बाइबल के वचनों के कारण धमकी देने लगते हैं या मुझे सताने लगते हैं तब मैं बाइबल और उसके वचनों में अपनी रुचि को खो देता हूँ। और यीशु मसीह के पीछे चलना छोड़ देताहूँ और उससे दूर चला जाता हूँ। तब मेरी कोई जड़ नहीं रहती है। इसका अर्थ यह है कि मैं ने वचन को तो ग्रहण किया था परन्तु अपनी दोषभावना का अंगीकार किए बिना। मेरा अंगीकार मेरे अन्दर से निकले विश्वास के द्वारा नहीं होता है। इसलिए मैं परमेश्वर के वचन को थामें रहने के लिए कोशिश भी नहीं करता हूँ। मैं भूल जाता हूँ कि सच्चा चेला बनने के लिए पूर्ण समर्पण, और अहम का त्याग करना, बलिदान, सेवा और दुख उठाना है। मैं ने कभी भी उस कीमत को नहीं गिना जो एक विश्वासी बनने और विश्वासी बने रहने के लिए दी जाती है। मैं भूल जाता हूँ कि परमेश्वर तक पहुँचने का रास्ता केवल क्रूस से होकर जाता है। और क्रूस तो दुखों का प्रतीक है। और यही कारण है कि मैं केवल कुछ समय के लिए ही विश्वास में बना रहता हूँ।

मुख्य शिक्षा जो ज़रूरी है वह है, “परमेश्वर के वचन को अपने अन्दर संजोए रखना।” (लूका 8:15) और साथ ही उस पर विश्वास रखना और उसकी हर आज्ञा को हर परिस्थिति में मान लेना। मुझे तुरन्त अपनी इस प्रवृत्ति से निबटना होगा जो मुझे वचनों को सुनते समय मुझे केवल मानसिक रूप से छूती है।

8:14

प्रश्न 7. काँटों से भरी भूमि किस का प्रतीक है?

नोट्स -काँटो से भरी भूमि तस्वीर है, उस भूमि की जो उस दिल के समान है जो पहले से किसी बात में उलझा रहता है। जब भी मेरा दिल ऐसी मानसिक परिस्थिति में होता है,तब मैं परमेश्वर के वचन को छोड़ अन्य चीज़ों पर अधिक ध्यान देता हूँ। तब मेरा दिल परमेश्वर की चीज़ों और संसार की चीज़ों में बँटा हुआ होता है। मैं अपने दिल मे अपने प्रतिदिन के काम और जीवन के विषय में चिन्ता को इतनी अधिक जगह दे देता हूँ या फिर किसी रीति से अधिक धन कमाया जा सकता है, या किस तरह से जीवन के सुख विलास का और अधिक आनन्द लिया जा सकता है, जिससे मेरे पास परमेश्वर के वचन के लिए स्थान ही नहीं रहता है। उस समय मैं निरन्तर संसार की चीज़ों द्वारा ध्यान हटाने वाली स्थिति में होने के कारण अपनी प्राथमिकताओं का गलत चुनाव कर लेता हूँ। तब मैं दुनियाँ की चीज़ो में इस रीति से पहले से ही फँसा होता हूँ कि मेरे पास न तो परमेश्वर के वचन के लिए समय होता है और न ही उसे अपने जीवन में लागू करने का। नतीजा यह होता है कि परमेश्वर के वचन का मेरे दिल के अन्दर ही गला घोंट दिया जाता है। अन्त में कभी भी रीति से परिपक्व नहीं बन पाता हूँ और न ही किसी भी रीति से फलवन्त हो पाता हूँ।

इससे मुख्य शिक्षा यही मिलती है,अपनें हृदय को साफ, इमानदार और अच्छा बनाए रखें। (लूका8:15) मुझे उसे संसार कि चिन्ताओं से, धन के धोखे, संसार के सुख-विलास और गलत इच्छाओं से मुक्त रखना है। मुझे तुरन्त अपनी चिन्ताओं से, अपनी धन के प्रति लालसा से और गलत इच्छाओं को प्राथमिकता देने से निबटना होगा।

8:15

<u>प्रश्न 8. अच्छी भूमि किस का प्रतीक है?</u>

नोट्स -अच्छी भूमि प्रतीक है एक ऐसे दिल की जो प्रतिउत्तर देता है और जो कुछ कहा जाता है उसे अपने अन्दर रखता है। यह वह दिल है जो पूरी तरह से तैयार है और जो फलवन्त है। जब भी मेरा दिल इस तरह की मानसिक स्थिति में होता है तब मैं,परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर ऐसा देता हूँ जैसा यीशु मसीह चाहते हैं कि मैं प्रतिउत्तर दूँ। जब मेरी मानसिक स्थिति ऐसी होती है तब मेरा दिल उन तीन मानसिक स्थितियों के विपरीत होता है।

इससे 3 मुख्य शिक्षाएँ मिलती हैः

- **<u>पहली भूमि की मिट्टी से विपरीतः</u>** जब भी मैं परमेश्वर के वचन को पढ़ता, सुनता या उसका अध्ययन करता हूँ तब मैंउसे ध्यान से सुनता हूँ, उसे समझता हूँ और उसे ग्रहण कर लेता हूँ।) (मत्ती 13:23; मरकुस 4:20)मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि ऐसा करने से परमेश्वर का वचन मुझे बचा ले और मुझे बदल डाले। (लूका 8:12)
- **<u>दूसरी भूमि की मिट्टी के विपरीतः</u>** जब कभी मैं परमेश्वर का वचन सुनता हूँ मैं इस विषय पर सोचने लगता हूँ कि मुझे इसपर विश्वास करने की और इसका पालन करनें के लिए क्या कीमत चुकानी होगी। मैं कीमत का अन्दाज़ा इस लिए लगाता हूँ क्योंक मैं विश्वासी बना रहना चाहता हूँ। उस समय पर भी जब मेंकठिनाइयों और सताव का सामना कर रहा होता हूँ।मैं परमेश्वर के वचन को गहराई से अपने दिल में संजोए रखता हूँ। और मैं उसी वचन से हर कठिन परिस्थिति में लिपटा रहता हूँ। (लूका 8:15)
- **<u>तीसरी भूमि की मिट्टी के विपरीतः</u>** मैं अपने दिल कोसाफरखता हूँ, और उसे उन सब बातों से मुक्त रखता हूँ जो मेरे अन्तर बसे परमेश्वर के वचन का गला घोंट सकती हैं। (लूका 8:15) उदाहरण के लिए मैं उसे चिन्ताओं से, धन से, और संसार के भोगविलास से दूर रखता हूँ।

परमेश्वर का वचन मेरे दिल में तभी काम करता है जब मैं उसका सही प्रतिउत्तर देता हूँ, और जब मैं उसे दिल में दोष को समझ कर धारण करता हूँ और अपने दिल को साफ रखता हूँ। इस रीति से मैं परमेश्वर के लिए पूरे प्रयास और मेहनत के साथ फल उत्पन्न करता हूँ। (लूका 8:15) और इस रीति से मैं कभी 30 गुणा, कभी 60 गुणा और कभी 100 गुणा उत्पन्न कर सकूँगा। (मत्ती 13:23; मरकुस 4:20)

8:15

प्रश्न 9. <u>इस दृष्टान्त (उदाहरण में कही कहानी जिसमें शिक्षा छिपी है) क्या वह प्रचारकों के लिए परमेश्वर के वचन में एक संदेश छिपा है या यूँ कहें एक सन्देश उन के लिए है जो उस वचन को ग्रहण करना चाहते हैं?</u>

नोट्स -पहली बात यह है कि परमेश्वर के वचन का इस दृष्यानत की कहानी के उदाहरण केवल प्रचारकों के लिए नहीं है परन्तु यह तो हर उस व्यक्ति के लिए है जो परमेश्वर के वचन को ग्रहण करता है। यह भूमि की इस कहानी द्वारा प्रचारकों को यह भी बताता है कि वे इस संसार में चार भिन्न तरह के लोग पाएँगे और उनकी परमेश्वर के वचन के संदेश के प्रति चार भिन्न तरह की प्रतिक्रिया होगी।यह दृष्टान्त (बीज की कहानी) इससे कहीं अधिक बताता है।

इस दृष्टान्त की कहानी का प्रयोग हमें सिखाता है कि संसार के लोगों में, जिस में याजक भी शामिल हैं, उन में परमेश्वर के वचनके प्रति जीवन के भिन-भिन्न समय पर चारों तरह के व्यवहार पाए जाते हैं। श्रोता का व्यवहार और उसके दिल की अवस्था किसी भी नियत समय पर परमेश्वर के वचन का क्या असर होगा इस बात को सिद्ध करती है। यीशु नें हमे यह नीतिकथा हमें इस लिए सुनाई थी कि हम परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी क्या है उसे पहचान लें।

उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया जैसे किउसे सुनना कि उसे समझ जाएँ और फिर उसे ग्रहण कर लेना होगा। हर बार जब मेरा दिल अनुकूल प्रतिक्रिया के साथ गम्भीरता से, पूरी तैयारी के साथ तैयार होना तब मैं परमेश्वर के वचन को सुनने

और समझने के लिए उत्सुक रहूँगा। तब मैं दृड़ संकल्प के साथ परमेश्वर के वचन को कठिन परिस्थितियों में भी थामें रहूँगा। तब(मत्ती 13:19, मरकुस 4:20), ग्रहण करने का अर्थ है कि उसे सही जान कर मान लेना। (प्रेरितों के काम 16:21) उसे अनुकूल जान कर प्रेम से स्वीकार करना। (इब्रानियों 12:6)

उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया गम्भीर रूप से दोषसिद्ध और कठिन परिश्रम के साथ होनी चाहिए जिससे हम उसे अपने पास रख सकें। (लूका 8:15) अपने पास रखने का अर्थ है उसे याद रख सकें। (1 कुर.15:2) उसे कभी भी छोड़े नहीं (लूका 8:15, 1 थिसलुकियों 5:21) उसकी इस रीति से रक्षा करना कि वह कभी भी खो न जाए। (1 कुर.11:2)

उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया साफ दिल से और एक मन से हो। (लूका 8:15)

और फिर हमारी प्रतिक्रिया ऐसी होनी चाहिए कि अधिक कोशिश के साथ फलवन्त होने पाएँ। (लूका 8:15)

हर बार जब मैं सुनता हूँ, पढ़ता हूँ या फिर बाइबल का अध्ययन करता हूँ उस समय मेरे दिल की अवस्था ही इस बात का फैसला करेगी कि परमेश्वर के वचन का मुझ पर और मेरे जीवन पर कैसा प्रभावहै औरमैं समय लेकर फलवन्त बनूँगा।

साराँशः मेरे दिल की अवस्था मेरे जीवन के किसी भी दिन के लिए यह निर्धारित करेगी कि परमेश्वर के वचन का मेरे जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ा है। किस मन से मैं ने परमेश्वर के वचन को सुना है, पढ़ा है, या अध्ययन किया है यही सिद्ध करेगा कि मैं प्रभु में आगे बढ़ूँगा, बदल जाऊँगा या फलवन्त बनूँगा।

<u>प्रश्न 10. इस दृष्टान्त का साराँश क्या है?</u>

नोट्स -इस दृष्टान्त का साराँश यह है कि मेरे मन की स्थिति ही निर्धारित करती है कि परमेश्वर के वचन के प्रति मेरी क्या प्रतिक्रिया होगी। और जो भी मेरी प्रतिक्रिया होगी वही निर्धारित करेगी कि मैं परमेश्वर को ले कर कितना फल लेकर आऊँगा।

इस दृष्टान्त का साराँश यह है कि मेरे मन की स्थिति ही निर्धारित करती है कि परमेश्वर के वचन के प्रति मेरी क्या प्रतिक्रिया होगी। और जो भी मेरी प्रतिक्रिया होगी वही निर्धारित करेगी कि मैं परमेश्वर को ले कर कितना फल लेकर आऊँगा।

जीवन में मेरे भले कामों का प्रभाव इस बात पर निर्धारत है कि परमेश्वर के वचन के प्रति मेरा व्यवहार और मेरी प्रतिक्रिया कैसी है।

यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी है जो मन को बदलने की इच्छा नहीं रखते हैं। पर उन लोगों के लिए उत्साहजनक और आशापूर्ण बात है जो अपने दिल के व्यवहार को बदलना चाहते हो। हर बार जब मैं वचन को सुनता, पढ़ता या अध्ययन करता हूँ तब मैं तुरन्त ही अपने व्यवहार को बदल कर सुनता हूँ, समझता हूँ और उसे संजो कर रख लेता हूँ और फिर कठिन परिश्रम से फलवन्त हो जाता हूँ।

8:15

<u>प्रश्न 11 मैं कैसे कठिन परिश्रम करके एक अच्छी फसल उगा सकता हूँ?</u>

नोट्स -शैतान तो मेरे चारों तरफ घूमता रहता है। भौतिक संसार मुझ से बाहर है लेकिन मेरा पापमय स्वभाव मेरे अन्दर है। क्योंकि वे सब मेरे विरुद्ध लड़ना चाहते हैं। इसलिए मेरे लिए भी निरन्तर लड़ने की ज़रूरत है। सो मैं किस रीति इस परिस्थिति के विरुद्ध कैसे कठिन परिश्रम करूँ?

- जब भी मैं वचन को सुनता, पढ़ता, उसका अध्ययन करता, उस पर मनन करता हूँ या बाइबल के वचनों को अपने जीवन में लागू करता हूँ और जब मैं उन वचनों को दूसरों को बताता रहूँगा तब मैं निरन्तर कठिन परिश्रम करता

रहूँगा। मैं इन अनुशासन के नियमों पर चलता रहूँगा तब भी जब मैं कठिन परिस्थितियों और सताव से गुज़रूँगा।

- मैं सही परिस्थितियों में और सही मनोस्थिति से भी कठिन परिश्रम करूँगा। इसका अर्थ है कि जब मेरा दिल साफ और बँटा हुआ न होगा।
- जब मैं परमेश्वर के वचन को अनुमति दे दूँगा कि वह मेरे विचारो, भावनाओं और व्यवहार को बदल डाले तब भी मैं कठिन परिश्रम करूँगा।
- मुझे निर्णय लेना है कि मैं कभी भी हार नहीं मानूँगा। मैं कठिन परिश्रम करता रहूँगा क्योंकि परमेश्वर का वायदा है कि वह मेरे साथ है।

<u>तरीका 4</u> **लागू करना**
मनन करें - इस लेखाँश में कौन सा सत्य ऐसा है जिसे जीवन में लागू किया जा सकता है?
गवाही देकर उसे लिख कर रख लेःः आईए हम एक दसरे के साथ एक ऐसी सूची तैयार करें जिन्हें हम अपने जीवन में लागू कर सकते हैं।
मनन करें -ऐसी कौन सी सूची है जिसे परमेश्वर चाहते हैं कि हम अपने निजि जीवन में लागू कर सकते हैं? इस बात पर विचार करें।
संजो कर रख लेः अपनी निजी सूची को अपनी कॉपी में लिख कर रख लें। और आज़ादी से अपनी निजि गवाही दें। (याद रहे कि हर दल में भिन्न-भिन्न लोगों की सूची भी भिन्न ही होगी। वे भिन्न नियम बनाएँगे और भिन्न रीति से उसे अपनाएँगे। जो सच्चाई उनको समझ आएगी वह भी भिन्न होगी। और वे उसे अपने जीवन में उसी सच्चाई को भिन्न रूप से लागू करेंगे।)

1. <u>सत्य को लागू करने के सम्भव उदाहरण लूका 8: 4-15</u>

8:8b-10.बाइबल के प्रचार को बहुत ही ध्यान से सुनिए। कोशिश करें कि आप बाइबल के उस लेखाँश के अर्थ को गम्भीरता से समझने का प्रयास करें। (मत्ती 13:19-23; मरकुस 4:13)
8:11.बाइबल के संदेशों को बड़ी गम्भीरता से ले और उसी रीति से आपकी प्रतिक्रिया भी प्रकटहो।
8:12 बाइबल के संदेशों पर विश्वास करें जिससे आप उद्धार पा सकें।
8:13.बाइबल के संदेशों के द्वारा स्वयं की दोषसिद्धि को विकसित करें केवल बाइबल का ज्ञान काफी नहीं है।
8:15.बाइबल के पदों को याद करें जिससे आप उनको जीवन में संजो कर रख सकें।
8:15. आश्वस्थ हो जाए कि आप का हृदय साफ है और बाइबल पढ़ते, या उसका अध्ययन करते समय आपका ध्यान अन्य बातों में बँटा हुआ नहीं है।
8:15.नियमित रूप से बाइबल का वचन जीवन में लागू करके फलवन्त हो जाएँ।

2. <u>निजि रूप से सत्य को लागू करने के उदाहरण लूका 8: 4-15</u>

परमेश्वर चाहते हैं कि हर बार जब मैं बाइबल के वचन को सुनुँ तो मैं उसे समझ जाऊँ और शैतान उसे मेरे दिल से दूर न ले जा सके। इसलिए मैं सप्ताह में एक बार बाइबल का अध्ययन करना चाहता हूँ। सप्ताह में एक बार बाइबल का अध्ययन मुझे वचन को और अधिक समझने में सहायता देगा।

परमेश्वर चाहते हैं कि मैं बढ़ूँ और फलवन्त हो जाऊँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि जब भी मैं बाइबल का वचन पढ़ूँ या उसका अध्ययन करूँ, मैं स्वयं से एक प्रश्न करूँ, “यह वचन किस रीति से मुझे बदल सकता है और किसी रीति से दूसरों पर प्रभाव डाल सकता है।” और तब मैं इस को अपने जीवन पर लागू करूँगा।

तरीका 5. **प्रतिक्रिया**

आईए हम एक सत्य के विषय में प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें सिखाया है। और जो लूका 8:4-15 में लिखा है। (अपनी प्रार्थना में उस बात का प्रतिउत्तर जो आपने बाइबल अध्ययन करते समय सीखा है। कोशिश करें कि आपकी प्रार्थना केवल एक या दो वाक्यों की हो। याद रहे पूरे दल के अन्य सदस्य भी भिन्न सत्यों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (5 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो के दल में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें और फिर संसार के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवे के लिए निर्देशः दल के सदस्यों को घर पर नए अध्याय की तैयारी के लिए काम दें और उसे कापी पर नोट करने को कहें।

1. <u>समर्पण दल के सदस्य समर्पण करें</u> कि वे परमेश्वर के वचन जो बाइबल में लिखे है उनके प्रतिउत्तर में जो बाइबल से सीखा है वही नियमित रूप से करेंगे। बाइबल का अध्ययन भी नियमित रूप से करेंगे।
2. <u>परमेश्वर के साथ समय बिताना:</u> परमेश्वर के साथ 1 घंटे का समय बिताएँ और मत्ती 8:1-11:24 हर दिन पढ़ेंगे । यहाँ पर अपने मनपंस्द सच के तरीके का प्रयोग करें। (उनको लिख कर नोट्स भी बनाएँ।)
3. <u>याद करना:</u> वचनों पर मनन करें और उन को याद कर लें। इसके लिए युहन्ना 10:28 पढ़ें। और हर दिन जो भी पद याद करते हैं उस पर फिर से नज़र डालें।
4. <u>प्रार्थना:</u> विशेष प्रार्थना करें किसी एक व्यक्ति के लिए या किसी विशेष चीज़ के लिए जो परमेश्वर आपके लिए कर रहा है। (भजन 5:3)
5 <u>अपनी चेले बनाने की कॉपी को पूरी तरह से तैयार कर ले</u>: आपने इस हफ्ते में कितनें नए चेले बनाए हैं। उसमें आपके परमेश्वर के साथ निजी नोट्स भी तैयार हों, आपने कितने पद याद किए हैं, बाइबल अध्ययन के नोट्स और इस कार्यक्रम की तैयारी के नोट्स।